रिकार्ड– जो पिया के साथ है..... ओमशांति प्रातःक्लास 2–7–67

डबल ओमशांति– एक बाप स्वधर्म शांत धर्म में टिका हुआ है। बच्चों को भी कहते हैं कि अपने स्वधर्म में टिको और बाप को याद करो। और कोई ऐसे कह न सके कि बाप को याद करो, स्वधर्म में टिको। तुम बच्चों की बुद्धि में निश्चय है। निश्चयबुद्धि विजयंति वो ही विजय पहनेंगे। काहे पर विजय पावेंगे?बाप के वर्से पर। स्वर्ग में जाना यह है बाप के वर्से पर विजय पाना। बाकी है पद के लिए पुरुषार्थ। स्वर्ग में जाना तो जरूर है। बच्चे जानते हैं कि यह छी2 दुनियां है। बहुत अथाह दुःख आने वाले हैं। ड्रामा के चक्र को भी तुम बच्चे जानते हो कि अनेक बार बाबा आया है सभी आत्माओं को पावन बनाकर मच्छरों की तरह ले जाने और खुद भी निर्वाणधाम में जाकर विश्राम करेंगे। बच्चे भी जावेंगे। तुम बच्चों को यह तो खुशी रहनी चाहिए कि .....अपने सुखधाम जावेंगे वाया शांतिधाम। यह है तुम्हारी एम ऑब्जेक्ट रोज2 सुनते हो समझते हो। हमको पतित–पावन बाप पढ़ाते हैं। पावन बनने का बहुत सहज उपाय बताते हैं याद का। यह भी नई बात नहीं है। लिखा हुआ भी है कि भगवान ने राजयोग सिखाया। सिर्फ भूल यह कर दी है कि कृष्ण का नाम डाल दिया है। ऐसे भी नहीं कि बच्चों को जो नालेज मिल रही है वो गीता के इलावा अन्य किसी शास्त्र में होगी। गपोड़े तो बहुत मारते हैं कि फलाने वेद में है कि शिव परमात्मा ने ब्रह्मा द्वारा यज्ञ रचा था। उसकी समाप्ति आबू में हुई थी आदि2 यह भी सब गपोड़े हैं। अगर ऐसा होता तो सुनाने वाले खुद तो भागे ही आते। बातें तो बहुत लोग बनाते भी हैं ना। बच्चे जानते हैं कि कोई भी मनुष्य की महिमा है नहीं। जैसे कि बाप की है। बाप नहीं आवे तो सृष्टि का चक्र ही नहीं फिरे। दुःखधाम से सुखधाम कैसे बनें?सृष्टि का चक्र तो फिरना ही है। बाप को भी जरूर आना है। बाप आते ही हैं सबको ले जाने। फिर चक्र फिरता है। बाप नहीं आवे तो कलियुग से सतयुग कैसे बने?बाकी यह बातें किसी शास्त्र में नहीं हैं। सर्वशास्त्रमईशिरोमणी में ही नहीं है तो उसके नीचे की पुस्तकों में हो कैसे सकता है?ऐसे2 बातें कोई सुनाते भी हैं तो उसेमं खुश नहीं होना चाहिए। किसी को बताना भी नहीं चाहिए कि ऐसे2 वेद में है। कहेंगे कि इसने तो यह अपना बनाया है। यह राजयोग तो है ही गीता में। बाकी ऐसी बातों में कुछ रखा नहीं है। अगर समझते कि भगवान आबू में आया हुआ है तो एकदम भागते मिलने लिए। सन्यासी भी चाहते तो यही हैं ना कि भगवान से मिलें। पतित–पावन को याद (करना) है वापस जाने लिए। अब तुम बच्चे पदम भाग्यशाली बन रहे हो। वहां अथाह सुख होते हैं। नई दुनियां में जो देवी देवता धर्म था वो अब है नहीं। बा पतो दैवी स्वराज्य की स्थापना करते ही हैं ब्रह्मा द्वाा। यह तो क्लीयर है। तुम्हारी एम ऑब्जेक्ट ही यह है। इसमें तो .. ..की बात ही नहीं। आगे चलकर समझ ही जावेंगे। राजधानी तो जरूर स्थापन होनी है। आदि सनातन तो है ही देवी देवता धर्म। ल.ना.को कोई हिंदू नहीं कहा जाता है। हिंदू कोई धर्म नहीं है। हिंदुस्तान के रहने वाले को हिंदू कहना यह भी तो मूर्खता है। (जब) स्वर्ग में रहते हो तो इनका नाम ही भारत रहता है। फिर जब तुम नर्क में आते हो तब हिंदुस्तान नाम पड़ता है। हिंदुस्तान नाम है ही नर्कवासियों का। यहां तो कितना दुःख ही दुःख है। फिर यह धरती बदलती है। स्वर्ग में तो है ही सुखधाम। यह नालेज तुम्हीं बच्चों को है। दुनियां के मनुष्य कुछ भी नहीं जानते हैं। बाप खुद कहते हैं कि अभी है अंधेरी रात। रात में ही मनुष्य धक्के खाते रहते हैं। बच्चे तो रोशनी में हो। यह भी साक्षी होकर बुद्धि में धारण करना है। सेकेंड बाइ सेकेंड सृष्टि का चक्र फिरता रहता है। एक दिन नहीं मिले दूसरे से। सारी दुनियां की एक्ट बदलती रहती है। नई2 सीन चलती रहती है। इस समय टोटल है ही दुःख की सीन। अगर सुख है तो भी कागविष्टा समान। बाकी दुःख ही दुःख है। इस जन्म में करके सुख होगा फिर दूसरे जन्म में दुःख। अब तुम बच्चों की बुद्धि में यह रहना है कि अब हम जाते हैं अपने घर। इसमें मेहनत करनी है पावन बनने की। श्री2 ने श्रीमत दी है ल.ना. बनने की। बैरिस्टर मत देंगे कि बैरिस्टर भव। अब बाप भी कहते हैं

श्रीमत से यह बनो। अपने से पूछना चाहिए कि मेरे में कोई अवगुण तो नहीं है। इस समय गाते भी हैं मुझ निर्गुण हारे में कोई गुण नहीं है। आप ही तरस परोई। तरस अर्थात् रहम। बाप रहम क्या करे वो (भी) कोई को पता नहीं है। बाप कहते हैं मैं तो रहम करता नहीं हूँ। रहम तो हर एक अपने पर करता है। यह ड्रामा बना हुआ है। बेरहम रावण तुमको दुःख में ले जाते हैं। यह भी ड्रामा में नूंध है। रावण का भी कोई दोष नहीं है। बाप आकर सिर्फ राय देते हैं। बाकी यह रावण राज्य तो फिर भी चलेगा। ड्रामा बनादी है। ना तो रावण का दोष है ,ना ही मनुष्यों का दोष है। चक्र को फिरना ही है। रावण से छुड़ाने लिए ही बाप युक्तियां देते रहते हैं। रावण मत पर तुम कितने पापात्मा बने हो। अब पुरानी दुनियां है फिर जरूर नई दुनियां आवेगी। चक्र तो फिरेगा ही ना। अब सतयुग कोई ही जरूर आना है। अब तो है संगमयुग। महाभारत लड़ाई भी इसी समय की है। विनाशकाले विपरीत बुद्धि भी होने का है और हम विजयंति। हम स्वर्ग के मालिक होंगे। बाकी कोई भी होंगे ही नहीं। यह भी समझते हो कि पवित्र होने बिना देवता बनना मुश्किल है। अब बाप से श्रीमत मिलती है श्रेष्ठ देवता बनने। ऐसी मत कब मिल नहीं सके। श्रीमत देने का उनका पार्ट भी संगम पर है। और कोई में ज्ञान है नहीं। भक्ति माना ही भक्ति। उनको ज्ञान नहीं कहेंगे। रुहानी ज्ञान ज्ञान सागर रूह ही देते हैं। उनकी ही महिमा भी करते हैं ज्ञान का सागर,सुख का सागर.....बाप पुरुषार्थ की युक्तियां भी बताते रहते हैं। खयाल रखना चाहिए कि अगर अब मैं फेल हुआ तो कल्प कल्पांतर फेल होता ही रहूंगा। बहुत चोट लग जावेगी। श्रीमत पर नहीं चलने कारण बहुत चोट लग जाती है। ब्राह्मणों का झाड़ तो बढ़ना भी जरूर है। इतना ही बढ़ेगा जितना दैवी झाड़ है। तुमको तो पुरुषार्थ करना और करवाना है। जिन्होंने कल्प पहले भी किया है उनको कोई भी तकलीफ नहीं फील होगी। सैम्पलिंग लगता रहेगा। ताकि पूरे देवताओं का झाड़ पूरा हो जावे। तुम जानते हो कि अब हमारा कल्याण हो रहा है। पतित दुनियां से पावन दुनियां में जाने का कल्याण होता है। बुलाते भी हो कि पावन दुनियां में ले जाओ। तुम बच्चों (का) अब ताला खुलता है। बाप तो बुद्धिवानों की भी बुद्धि है ना। अब तुम समझ रहे हो फिर आगे चलकर देखना कि किस2 का ताला खुलता है। यह भी ड्रामा चलता रहता है। फिर सतयुग से रिपीट होगी। ल.ना. जब तख्त पर बैठते हैं तब सम्वत शुरू होता है। तुम लिखते भी हो वन से 1250 तक सतयुग। कितना क्लीयर है। एक कहानी है ना सत्यनारायण की कथा। अमरनाथ की कथा कहानी है ना। अब तुम बच्चों को सच्ची2 कहानी सुनाते हैं। तुम अभी सच्ची सुनते हो। इसका ही फिर भक्तिमार्ग में गायन चलता है। त्यौहार आदि सब इसी समय के हैं। नम्बरवन पर्व है शिवबाबा का। कलियुग के बाद जरूर बाप को आना पड़े नई दुनियां बनाने वो चेंज करने। चित्रों को कोई अच्छी रीति बैठकर देखे तो जाने कि कितना पूरा हिसाब बनाया हुआ है। तुमको यह निश्चय है कि कल्प पहले जितना पुरुषार्थ किया है उतना ही अब भी करेंगे जरूर। साक्षी होकर औरों को भी देखेंगे अपने पुरुषार्थ को तो जानते ही हो। तुम भी जानते हो। स्टुडेंट्स अपनी पढ़ाई को नहीं जानते होंगे?दिल खावेगी जरूर कि मैं इस विषय में बहुत बच्चा हूँ। नापास हो जाऊँगा। परीक्षा के समय जो नापास होते हैं उनका दिल धक2 होता है। तुम बच्चे भी सा. करेंगे। नापास तो हो ही .....फिर कर क्या सकते हैं?स्कूल में नापास होते हैं तो रिश्तेदार भी नाराज,टीचर भी नाराज हो जाता है। हमारे स्कूल में से कम पास हुये। वहां तो बहुत क्लासिज होते हैं ना। यहां तो एक ही क्लास है। कोई टीचर की क्लास के कम पास हुये तो समझ जावेंगे कि यह टीचर इतना अच्छा नहीं है। इसलिए ही कम पास होंगे। बाबा भी जानते हैं सैन्टर्स पर कौन2 अच्छे2 टीचर्स हैं। कैसे पढ़ाते हैं। कौन2 अच्छी रीति पढ़ाकर ले आते हैं। वो सबका पता पड़ता है। बाबा तो कहते रहते हैं कि बादलों को ले आना है। बच्चों को भी साथ में ले आवेंगे तो उनमें मोह रहेगा। अकेले निकलकर आना चाहिए तो बुद्धि अच्छी तरह लगी रहेगी। बच्चों को तो वहां पर भी देखते ही रहते हो। ....कहते हैं कि यह पुरानी दुनियां ....कब्रिस्तान होती है। नया मकान बनाते हैं तो बुद्धि में यह रहता है

न कि नया मकान बन रहा है। तो धंधा आदि भी करते ही रहते हैं ;परंतु बुद्धि जो है वो नये मकान तरफ ही लगी रहती है। चुप कर तो बैठ नहीं जाते हैं ना। वो तो है हद की बात। यह तो है बेहद की बात। अपने बच्चों आदि की सम्भाल भी करनी है ;परंतु बुद्धि वहां ही लगी रहती है कि अब हम घर जाकर फिर नई राजधानी में आवेंगे। यह याद रहेगा तो भी तुमको खुशी बहुत होगी। याद ना करने पर फिर पवित्र भी नहीं बन सकते हैं। कमाई नहीं कर सकेंगे। याद में नहीं रहेंगे तो कमाई कैसे करेंगे?पावन कैसे बनेंगे?यहां तो हैं ही सब पतित,भ्रष्टाचारी। श्रेष्ठाचारी कोई भी हो नहीं सके। भ्रष्टाचारी से तो सब पैदा होते हैं। बाकी कोई अच्छा आदमी,कोई बुरा आदमी वो तो होता ही है। भल बहुत अच्छे हैं ;परंतु है तो नर्कवासी ही ना। नर्कवासी है तो माना कि भ्रष्टाचारी है। यह सब बाप बैठकर समझाते हैं। इस समय दो किनारे हैं। बाप को तो खिवैया भी कहते हैं ;परंतु अर्थ नहीं समझाते हैं। तुम जानते हो कि बाप उस किनारे ले जाते हैं। आत्मा जानती है कि हम बाप को याद कर बहुत नजदीक जा रहे हैं। खिवैया नाम भी तो अर्थ सहित ही है ना। यह है सब महिमा। कहते हैं नैया मेरी पार लगाओ। सतयुग में भी ऐसे कहेंगे क्या?कलियुग में ही पुकारते हैं और एक को ही पुकारते हैं। ....**x 100** को थोड़े ही पुकारेंगे। तुम बच्चे ही समझते हो। यहां बेसमझ को तो आना ही नहीं है। बाप की सख्त मना है कि निश्चय नहीं है तो कब नहीं ले आना है। कुछ भी तो समझेंगे नहीं ना। पहले तो सात दिन का कोर्स दो। कोई2 को तो दो रोज में ही तीर लग जाता है। अच्छा लग गया तो फिर छोड़ेंगे थोड़े ही। कहेंगे हम तो सात रोज और भी सीखेंगे। सर्टीफिकेट भेज देते हैं। तुम झट समझ जावेंगे कि यह इस कुल का है। तेज बुद्धि जो होंगे वो कोई की भी बात की परवाह नहीं करेंगे। अच्छा, एक नौकरी छूट जावेगी तो दूसरी नहीं मिलेगी। सच्चे दिलवाले जो होते हैं उनकी नौकरी भी छूटती नहीं है। खुद भी वंडर खाते हैं। बच्चे कहते हैं कि हमारे पति की बुद्धि को फेरो। बाप कहते हैं कि मुझे मत कहो। तुम योग में रहो फिर बैठकर ज्ञान समझाओ। बाबा थोड़े ही बुद्धियों को फेरेंगे। फिर तो सभी ऐसे ही धंधा करते रहेंगे। जो रस्म निकलती है उसको ही पकड़ लेते हैं। कोई गुरू से किसी को फायदा हुआ सुना तो फिर तो उनके ही पीछे पड़ जावेंगे। नई आत्मा आती है तो उनकी महिमा तो निकलेगी ना। फिर तो बहुत फालोवर्स बन जाते हैं। इसलिए ही इन सब बातों को देखना नहीं है। तुम देखना है अपने को कि हम कहां तक पढ़ते हैं। यह तो बाबा करके चिटचैट करते हैं। सिर्फ कह देवें कि तुम बाप ही याद करते रहो तो तुम थक जावेंगे। यह तो घर में भी रहकर तुम याद कर सकते हो। ज्ञान का सागर है तो जरूर ज्ञान भी तो देंगे ना। यह है मुख्य बात कि मनमनाभव। साथ2 में सृष्टि की आदि,मध्य,अंत का राज भी समझाते हैं। चित्र निकले हैं। उनका भी बाप समझाते हैं। विष्णु की नाभी से ब्रह्मा को दिखाया है। त्रिमूर्ति भी है,फिर विष्णु की नाभी से ब्रह्मा, यह फिर क्या है?बाप बैठ समझाते हैं कि क्या राइट है ,क्या रांग है। कोई2 शास्त्र में तो चक्र यह दिखाया है ;परंतु कोई ने.....कितनी आयु लिख दी है कोई ने कितनी। अनेकों मतें हैं ना। रामायण भी बिल्कुल झूठा है। एक सीता को ही थोड़े ही रावण ले गया। बाप बैठ समझाते हैं कि यह रावण का राज्य तो सारी दुनियां पर है। यह भी वेट है। चारों तरफ पानी है। शास्त्रों में तो हद की बातें लिखी हुई हैं। बाप तो बेहद की बातें समझाते हैं कि सारी दुनियां में ही रावण का राज्य है। यह तुम्हारी बुद्धि में ज्ञान है कि हम कैसे पतित बने फिर कैसे पावन बनना है। फिर सारी दुनियां में ही रावण का राज्य है। यह तुम्हारी बुद्धि में ज्ञान है कि हम कैसे पतित बने। फिर कैसे पावन बनना है। फिर पीछे2 और धर्म आते हैं। अनेक वैरायटी है। एक नहीं मिले दूसरे से। एक जैसे फीचर्स वाले दो ही नहीं सकते हैं। तो सिद्ध होता है कि यह तो बना बनाया खेल है जो रिपीट होता है। बाप बच्चों को ही बैठ समझाते हैं। समय थोड़ा होता जाता है। अपनी ही जांच करो कि हम कहां तक खुशी में रहते हैं। अच्छा ,कांटों से फूल बनने वालों को फूल बनाने वाले रुहानी बापदादा का याद प्यार और.....।